ग्रामोफोन

–हरि भटनागर

जाफर मियाँ शहनाई के लिए मुहल्ले क्या, अपने पूरे कस्बे में मशहूर थे। तीन-चार बजते ही वे शहनाई लेकर चबूतरे पर आ बैठते और धूप निकलने तक बजाते रहते। वे शहनाई बजाते और ढोल पर साथ देता उनका दोस्त, संभू। संभू शहनाई के बजते ही उठ बैठता और जाफर मियाँ के साथ ताल भिड़ाता। बताने वाले बताते हैं कि शहनाई का ऐसा बजैया और ढोल का ऐसा पिटैया कस्बे क्या, दूर-दूर के इलाके में दूसरा न था। सवेरे शहनाई और ढोल न बजे तो मुहल्ले के लोगों की आँखें न खुलती थीं। लगता कि रात है, अभी सोए रहो।

लेकिन अब न शहनाई है और न ढोल की आवाज। लंबे समय से सब कुछ खामोश है जैसे सज़ा दे दी गई हो। और वास्तव में सज़ा दे दी गई थी। ढोल और शहनाई को नहीं, जाफर मियाँ को। उस सज़ा से जाफर मियाँ इतने गमगीन हुए कि उन्होंने शहनाई बजाना ही छोड़ दिया। शहनाई से जैसे उनका कभी कोई ताल्लुक ही न रहा हो। और जब शहनाई नहीं बज रही थी तो ढोल क्यों बजेगा? संभू ने मारे अफसोस में ढोल खूँटी के हवाले कर दिया।

रहे शहनाई और ढोल के आदी लोग, उन्हें लगता कि शहनाई और ढोल की आवाज़ बस उठने ही वाली है। ऐसा वे सोच तो लेते पर तुरंत ही अपनी गल्ती महसूस करते। शहनाई क्या, जाफर मियाँ ने तो दर्जीगीरी तक छोड़ दी। कुछ नहीं करते वे। चबूतरे पर हर वक्त ग़मगीन से बैठे रहते। न किसी से बोलते; न बतियाते। बीवी सामने खाना रख देती तो खा लेते, नहीं भूखे बैठे रहते। लोग कहते कि दिमाग़ पर असर होने से उनकी बोलती बंद हो गई है। अब खुदा ही उन्हें बचा सकता है।

एक संभू ही है जो कहता फिरता है कि जाफर मियाँ को कुछ नहीं हुआ, सिवाय सदमे के।

खैर, उस सजा की एक छोटी-सी कहानी है।

जाफर मियाँ का कुंदन शाह नाम का एक दोस्त था। वह सुनार था और जाफर मियाँ के घर के ठीक सामने रहता था। जाफर मियाँ ने चोरी के डर से अपनी बेटी के शादी के जेवर और नगदी कुंदन शाह की तिजोरी में रखवा दिए थे। इस ख्याल से कि उसके पास सुरक्षित रहेंगे और निश्फिकर हो गए थे। मगर जब बेटी की सगाई हुई और वे जेवर और नगदी लेने गए तो कुंदन शाह ने साफ इनकार कर दिया कि उसके पास उसने कभी कुछ रखा ही नहीं।

जाफर मियाँ चीखे-चिल्लाये। लड़े-झगड़े। इंसाफ के लिए लोगों को बटोरा लेकिन कोई असर नहीं। कुंदन शाह टस से मस न हुआ। जाफर मियाँ की बीवी की जलती गाली से भी नहीं। आखिर में जाफर मियाँ ने अपना माथा चौखट से फोड़ लिया और दाढ़ी नोच डाली जिसका मतलब सब्र से था और इस बद्दुआ से कि गरीब-गुर्बा का जेवर पैसा मारा है, हजम नहीं होगा, खाक में मिल जाएगा।

मगर कुंदन शाह खाक में मिलने की बजाय दिन पर दिन तरक्की करता जा रहा था। कच्चा कवेलू वाला मकान तोड़वाकर उसने पक्का मकान बनवाना शुरू कर दिया था। दरवाजे पर लोहे का फाटक लगवा दिया था। और रोशनी के लिए एक लट्टू लटका दिया था। जाफर मियाँ के लिए यह सब तकलीफदेह था। पर गाली देने, बाल-दाढ़ी नोचने के सिवा कुछ भी करने में असमर्थ थे।

उस दिन दोपहर को जाफर मियाँ जबरदस्त तकलीफ में थे। इसकी वजह कुंदन शाह न होकर वह इक्का था जिस पर लाउडस्पीकर में तीखी आवाज में फिल्मी गाना बज रहा था। यह आवाज इतनी तीखी और कानफोड़ थी कि जाफर मियाँ बेचैन हो उठे। उन्होंने इक्केवाले को भद्दी गालियाँ देनी शुरू कर दीं जो गाने की धुन पर मटकता हुआ गंदे इशारे करता जा रहा था।

कान में उँगलियाँ रखकर तीखी आवाज से बचा जा सकता था मगर गुस्से के आगे यह सूझ दुम दबाए कहीं दुबकी थी। तकरीबन हजार-एक गालियाँ दे चुके होंगे जाफर मियाँ, फिर चुप हो गए जैसे थक गए हों। लेकिन तीखी आवाज के साथ कान के रास्ते होती हुई एक बात उनके जेहन में जा पहुँची जिससे कि वे अदृश्य से कहीं देखते हुए खोए रहे, फिर मुस्करा उठे। एकाएक फुर्ती से उठे और अंदर आकर बीवी से पूछा कि

ग्रामोफोन कहाँ है? बीवी ने कबाड़ की तरफ इशारा तो कर दिया मगर यह नहीं पूछ पाई कि ग्रामोफोन का क्या करेंगे। वह घबरा-सी गई। अभी तक तो ठीक थे, चुप रहते थे, अब...ग्रामोफोन माँग रहे हैं, इसका मतलब है, कहीं कुछ गड़बड़ है। नहीं, इतने पुराने-कूड़े-कबाड़ की क्या जरूरत थी?

वह जाफर मियाँ को डरी निगाहों से देख रही थी और जाफर मियाँ थे कि कूड़े-कबाड़ को उठा-उठाकर बाहर फेंकते जा रहे थे। पुराने जंग खाये टीन कनस्तर, सड़ी रजाइयाँ, सड़े-गले कपड़ों की कतरनें, पुराने टूटे छाते, खाट के पावे, बाद्य वगैरह-वगैरह बाहर चबूतरे पर फेके जा चुके थे, गर्द के साथ जिनकी तीखी गंध नथुनों में बेतरह चुनचुनाहट मचा रही थी। मगर जाफर मियाँ को इस तीखी गंध का तनिक भी अहसास नहीं हो रहा था। वे हड़बड़ी में थे और ग्रामोफोन को ढूँढ रहे थे। कुछ और सामानों को उलटने-पटकने के बाद ग्रामोफोन मिल गया था। खुशी से वे फूले नहीं समा रहे थे।

बीवी ने पूछा कि ग्रामोफोन का क्या करेंगे तो उनका जवाब था,-आग बरसाएँगे।

आग बरसाएँगे।

हाँ।

ग्रामोफोन से कहीं आग बरसती है! बुदबुदाते हुए बीवी ने कहा।

ऐसी आग बरसेगी कि दफन हो जाएगा साला! अपने में बड़बड़ाते हुए जाफर मियाँ ने हवा में एक भद्दी गाली उछाली और बाहर चबूतरे पर बैठकर ग्रामोफोन के कल-पुर्जों को साफ करने लगे।

बीवी ने सिर पर आँचल डाला और आसमान की ओर हाथ और आँखें कर अल्ला ताला से जाफर मियाँ पर रहम की भीख माँगी।

जाफर मियाँ बुरा-सा मुँह बनाकर बड़बड़ाये कि अल्ला ताला से दुआ माँगने की जरूरत नहीं। आग तो बरसकर रहेगी, अल्ला ताला भी नहीं रोक पाएँगे।

काफी देर तक जाफर मियाँ कल-पुर्जों को साफ करते रहे। आखिर में जब मामला जमता नहीं दिखा तो उन्हें कुछ याद आया। अंदर आए और उस चादर को ढूँढ़ने लगे जिसमें गरम कपड़े बँधे थे जिसे कभी वे ओढ़ा करते थे। चादरा जब मिल गया तो उन्होंने सारे गरम कपड़े जमीन पर पटक दिए और कल-पुर्जो को समेट बाजार आए, अपने दोस्त, दीना के पास जो कभी ग्रामोफोन दुरुस्त करता था, अब लाउडस्पीकर वगैरह दुरुस्त करता है।

दीना ने ग्रामोफोन देखा और हँस पड़ा। एकाएक उसने काम में डूबकर गंभीरता से कहा-कबाड़ी की दुकान पीछे है!

जाफर मियाँ ने उसे गुस्से से देखा।

दीना ने कहा-अबे, ऐसे क्या देखता है! मैं कबाड़ी हूँ जो मेरे पास कबाड़ ले आया।

जाफर मियाँ ने बताया कि इसे दुरुस्त करना है तो दीना ठठाकर हँस पड़ा-अबे, इसे ठीक कराकर सुहागरात मनाएगा?

हाँ, सुहागरात मनाऊँगा। जाफर मियाँ ने कहा और उनकी आँखें गीली हो गई। उन्होंने अपने साथ हुए जुल्म का बयान किया और ग्रामोफोन को 'राइट' कराने की वजह बताई।

यह बाल सुलभ हरकत थी, फिर भी दीना ने जाफर मियाँ का दिल नहीं तोड़ा और न ही किसी तरह की बहस की। ग्रामोफोन की जगह उसने एक टेपरिकार्डर और बहुत सारे सामानों के साथ बड़ा-सा लाउडस्पीकर दिया ताकि वे अपना काम बखूबी कर सकें।

इन सामानों को लिए हुए खुशी से भरे जाफर मियाँ जब अपने दरवाजे इक्के से उतरे तो बीवी ने मत्था पीट लिया, मुहल्ले के लोगों ने उन्हें आश्चर्य से घेर लिया।

थोड़ी देर में तेज आवाज में गाना बजा तो पूरे जश्न का माहौल था। तकरीबन पूरा मुहल्ला इकट्ठा था। बच्चे गाने की धुन पर थिरक रहे थे। उनके बीच जाफर मियाँ थे जो अनेकानेक भाव-मुद्राएँ बना मटकते जाते थे।

एकाएक जाफर मियाँ ने देखा, बीवी नदारद है। यहाँ तक कि मुहल्ले के सारे लोग जा चुके हैं। सिर्फ बच्चे हैं जो थिरक रहे हैं। समझ गए कि पागल हरकत मानकर सब सरक गए! उन्होंने सिर झटका और सोचा कि कोई मुजायका नहीं। कोई रहे या न रहे, वे अपना काम करेंगे, पूरी ताकत से करेंगे।

बाहर वे काफी देर तक खड़े रहे। गली में अँधेरा छाया था। मच्छर कानों से टकरा रहे थे। किसी-किसी घर के लोगों के खाँसने, बोलने-बतियाने और बर्तनों की आवाजें आ रही थीं। कोई कुत्ते को दुरदुरा रहा था। सुभावन के घर का पल्ला शायद खुला था जिसमें लालटेन की पीली, मरी-सी रोशनी सड़क पर पड़ी थी। लेकिन फौरन ही वह गायब हो गई। लगता है किसी ने पल्ला भेड़ दिया। किसी-किसी घर के सामने

चिमगियाँ चमक रही थीं। लोग बीड़ियाँ पी रहे थे।

जाफर मियाँ ने कुंदन शाह के घर की ओर देखा। अँधेरे में ढका था उसका घर। लट्टू भी कई दिन से नहीं जल रहा था। किसी के बोलने-बतियाने की आवाज भी नहीं आ रही थी। शायद सब सो गए थे।

जाफर मियाँ ने साँस खींचकर सिर झटका जैसे कह रहे हों कि सो, चैन से सो! देखता हूँ, कब तक सोते हो।

गली के छोर पर जब कुत्ते रोने लगे, वे लंबे डग बढ़ाते, अपने चबूतरे पर आए और गाने की तीखी आवाज का मुआयना करने लगे।

गाने की तीखी आवाज कुछ ऐसे गूँजती जैसे हजारों-हजार मोर एक साथ चीख-चिल्ला रहे हों। लाखों-लाख कौवे हों जो किसी एक कौवे पर हुए जुल्म पर चीत्कार कर जुल्मी पर टोंट-पंजे मार रहे हों। ऐसा भी लगता जैसे करोड़ों की तादाद में मुसलमान 'हाय हसन' करते हुए छाती पीट रहे हों। उन्हीं के साथ बड़े-बड़े नगाड़े, ड्रम, तासे मानो हाय छोड़ रहे हों।

जाफर मियाँ ठठाकर हँसे!

जिस वक्त तीखी आवाज में गाना बजना शुरू हुआ,कुंदन शाह खाना खा रहा था। उसने झाँककर देखा, जाफर मियाँ उसकी तरफ भद्दे इशारे करते हुए मटक रहे थे। उसे लगा कि यह सब उसे तंग करने के लिए है। क्रोध में पागल होते हुए उसने थाली उठाकर नाली पर फेंक दी। दरवाजे पर लात मारी। बीवी को भद्दी गालियाँ देते हुए जो उस पर बड़बड़ाने लगी थी, खाट पर लेट गया, दाँत पीसते हुए। एकाएक मन हुआ कि उठे और जाफर मियाँ के मुँह पर तेजाब डाल दे। वह उठा लेकिन ऐसा करने की हिम्मत न जुटा पाया। काँप गया।

एकाएक सोचा कि वह इतना परेशान क्यों है? क्यों मान बैठा कि जाफर मियाँ का गाना-बजाना उसे तंग करने के खातिर है। जाफर तो पागल है, पागल! उसकी पागल हरकत पर वह क्यों परेशान होता है? उसने ऐसा सोचा मगर दूसरे पल फिर परेशान हो उठा। जाफर उसे देखकर भद्दे इशारे कर रहा था और मटक रहा था, क्यों? उसे तंग करने के लिए ही! हे भगवान!!! उसने सोने की कोशिश की लेकिन वह रात भर सो न सका। बुरी तरह करवटें बदलता रहा। रह-रहकर बैठता और गालियाँ बकता।

सवेरे वह बेतरह बौखलाया हुआ था। उसने जोरों से दरवाज़ा खोला। अगल-बगल देखा, कोई न दिखा तो बाहर आ खड़ा हुआ लेकिन तुरंत ही घर में तेज़ी से घुसा

और जोरों से दरवाजा बंद किया। फिर पता नहीं क्या सोचकर उसने उतने ही जोरों से दरवाजा खोला और बाहर आ खड़ा हुआ। बेचैनी उसकी और बढ़ गई थी। दिमाग की नसों में तनाव और आ गया था। भिचीं मुट्ठियाँ काँप रही थीं। वह लड़ने के पूरे मूड में दिख रहा था। एकाएक वह किसी पागल की तरह बड़बड़ाता हुआ फाटक का खटका सरका नल की ओर फुर्ती से बढ़ा जहाँ पानी भरने वाले लोगों की भीड़ थी। उनके पास पहुँचकर वह हाथ लहरा-लहरा कर लोगों से कुछ कहने लगा। सुनाई तो पड़ नहीं रहा था। सिर और छाती पीटने से लग रहा था कि वह अपने ऊपर होने वाले जुल्म की शिकायत कर रहा है।

जाफर मियाँ बेहद खुश थे उस दिन। उनका निशाना सही जगह पर लगा था।

दो-चार रोज कुंदन शाह नहीं दिखा। जाफर मियाँ की बेचैनी बढ़ी। उन्होंने लोगों से पूछा तो पता चला कि पास के शहर में पायलें खरीदने गया है। जाफर मियाँ को यकीन नहीं हो रहा था क्योंकि उन्होंने उसे निकलते देखा ही नहीं। हर वक्त तो वे उस पर निगाह रखे हैं, कब निकल गया? फिर सोचने लगे कि हो सकता है अँधेरे में निकल गया हो!

खैर, कुंदन शाह घर में हो या न हो, जाफर मियाँ ने तीखी आवाज में मंदी नहीं आने दी।

एक दिन जाफर मियाँ की बीवी बाजार से सौदा-सुलुफ लेके लौटीं तो उन्होनें बताया कि कुंदन शाह तो कहीं नहीं गया, लोग झूठ बोलते हैं। वह तो बिस्तरे पर पड़ा है। कहते हैं कि उसके सिर में बेपनाह दर्द रहता है। बीवी-बच्चे पैरों से कचरते हैं तब भी चैन नहीं मिलता....

किसी वैद-हकीम को क्यों नहीं दिखाता? जाफर मियाँ ने संजीदगी ओढ़ते हुए कहा।

मुए ने जैसा करा है, वैसा तो भरेगा! इसमें वैद-हकीम क्या कर लेंगे।

वैद-हकीम तकलीफ की दवा देंगे। जाफर मियाँ कुटिलता से मुस्कुराए, तुम जाकर कहो न कि इलाज कराए!

हाँ, मैं कहूँगी उस कमीन, मुँहजले से! बीवी ने कुढ़कर कहा,-मर जाए तो अरथी पर थूकूँ तक नहीं!

ये दर्द क्यों हो गया उसे? जाफर मियाँ ने निहायत ही संजीदा होकर पूछा।

पता नहीं। पान की पीक थूकते हुए उन्होंने कहा,–भाड़ में जाए। यकायक उन्होंने आँखें गोल करके पूछा–तुम इतनी पूछ-ताछ क्यों कर रहे हो?

कुछ नहीं, बस यूँ ही पूछ रहा था। कुछ भी हो, आखिर अपना पुराना दोस्त ही तो है–उन्होंने बीवी को बहकाना चाहा।

बीवी यकायक भावुक हो गई, बोली–यह तो मैं भी सोच रही थी। पूरी बात तो नहीं, इत्ता जानती हूँ कि उसे नींद नहीं आती रात-रात। जागता रहता है। हर वक्त उसे लगता कि बड़ी-बड़ी टीन की चद्दरें, बड़े-बड़े ड्राम कोई छत पर पटक रहा हो...

जाफर मियाँ मुस्कुराहट छिपाए उठे और बाहर आ खड़े हुए जहाँ तीखी आवाज के सिवा कुछ न था। उस तीखी आवाज में उन्हें लगा कि हजारों-हजार आदमी औरत-बच्चे चीख-चिल्ला रो रहे हों। जैसे भीषण आग लगी हो, सब चीत्कार कर रहे हों। कोई बचाने वाला न हो। उन्हें लगा कि यह रोने-चीखने, चीत्कार करने वाले और कोई नहीं, वे ही खुद हैं! वे सोचने लगे कि इन्हें कहीं का न छोड़ने वाला क्या चैन से बैठ सकता है! नहीं! कतई नहीं!!! यकायक वे गुस्से में भर उठे और उन्होंने मुट्ठियाँ भींचकर तेज आवाज में कई गालियाँ बुलंद कीं।

इस बीच एक रिक्शा कुंदन शाह के दरवाजे पर आकर रुका। रिक्शावान जमीन पर उकड़ूँ बैठकर बीड़ी पीने लगा। थोड़ी देर में एक बीमार-सा आदमी जो गंदे-मुचमुचे कपड़े में लिपटा-सा था, जिसे कोई औरत पकड़े हुए, सँभालती ला रही थी, रिक्शे की ओर बढ़ा। जाफर मियाँ ने गौर से देखा, यह आदमी और कोई नहीं, कुंदन शाह था और उसको सँभालने वाली कुंदन शाह की बीवी थी। कुंदन शाह का हुलिया बदल गया था। चेहरे पर पीलापन छा गया था और उसमें सिकुड़न बासी मूली जैसी थी। सिर पर दाढ़ी के बाल जरूरत से ज्यादा सफेद और बेतरतीब हो रहे थे।

रिक्शेवान ने कुंदन शाह को रिक्षे में बैठाने में मदद दी और रिक्शा आगे बढ़ा ले चला।

कुंदन शाह डॉक्टर केपास गया। डॉक्टर ने उसकी नब्ज पर उँगलियाँ रखीं। पलकें फाड़ी और उनमें टार्च की रोशनी मारी। जीभ बाहर निकलवाई और मुँह बड़ा-सा फड़वाया। जब वह ठीक से मुँह नहीं फाड़ पाया तो डॉक्टर ने मुँह नहीं देखा। पीठ और छाती पर आला फेरा और घुटनों पर उँगलियाँ बजाईं।

यकायक कंपाउंडर पर किसी बात पर चीखते हुए डॉक्टर ने दवा की पर्ची लिखी और पाँच दिन के बाद आने को कहा।

कुंदन शाह ने दवा खाई और पाँच दिन के बाद डॉक्टर के पास पहुँचा। इस बार डॉक्टर ने सरसरी नजर उस पर डालकर पहले लिखीं दवाइयाँ फिर से खाने को लिख दी और पाँच दिन आकर हाल बताने को कहा।

डॉक्टर की हिदायत मानते हुए कुंदन शाह पाँच दिन के बाद काँखता-कूँखता फिर किसी तरह पहुँचा। इस बार उसकी हालत पहले से ज्यादा पस्त थी। पहले से ज्यादा टूटा था। डॉक्टर ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और माथा सिकोड़कर सामने खड़ा हो गया। जैसे मर्ज को फिर से जाँचने का विचार कर रहा हो। और बाएँ हाथ की उँगलियाँ होंठों पर दौड़ाने लगा। यकायक उसने उसकी जाँच शुरू कर दी। पलकें फाड़कर देखीं। जीभ बाहर निकलवायी। नाखून देखे। सीने और पीठ पर आला फेरा और गहरी साँस छोड़कर कुर्सी पर पसर गया। माथे पर उसके बल था। आँखें सिकुड़ी थीं और होंठ भिंचे। लगता था जैसे अभी-अभी चिल्ला पड़ेगा। लेकिन वह चिल्लाया नहीं। बस इतना बोला कि तुम्हें कोई बीमारी नहीं।

कोई बीमारी नहीं! कुंदन शाह काँखते हुए चुंधी आँखें मिचमिचाता किसी तरह उठकर बैठता हुआ, रोनी आवाज में बोला–कोई बीमारी नहीं तो हालत क्यों पतली है?

इस प्रश्न पर डॉक्टर कुछ नहीं बोला, एकटक उसे देखता रहा।

पत्नी कुछ बोलने को हुई कि कुंदन शाह ने आगे कहा–रात-रात भर नींद नहीं आती, कहीं उस दर्जी, उस जाफर की कारस्तानी तो नहीं...

कौन जाफर? कौन दर्जी? डॉक्टर ने सख्त नजरों से उसे देखा और गुस्से में कहा,–मैं किसी दर्जी-बर्जी को नहीं जानता!

सहसा कुंदन शाह की बीवी कड़कती आवाज में हाथ लहराती बोली–जाफर मुआ दर्जी है, मुँहजला! दिन-रात बाजा आग की तरह फूँके रहता है, उसका नाश जाए!

डॉक्टर सख्त होकर बोला–आप क्या चाहती है कि मैं जाकर उसका बाजा बंद कराऊँ! डॉक्टर झल्ला उठा यकायक और मेज पर मुक्के पटकने लगा–आप दोनों पागल हो गए हैं, पागल! चले जाइऐ यहाँ से!!!

लेकिन साब, मेरी तबीयत तभी से गड़बड़ है–कुंदन शाह काँपते पैरों पर खड़ा अपने दोनों हाथ सिर पर रखे बुदबुदाया,–उसी ने टेप बजा-बजाकर...

इधर डॉक्टर दोनों की बातों पर सिर पीट रहा था, उधर जाफर मियाँ से एक पड़ोसी ने पूछा,–क्यों मियाँ, आज तुम्हारी दुकान ठंडी क्यों है? कोई गाना वाना नहीं

हो रहा है?

जाफर मियाँ ने सिर हिलाते हुए कहा–बजाऊँगा, बजाऊँगा। परेशान न हो! कुंदन शाह को डॉक्टर के यहाँ से तो लौटने दो!

लेकिन जब कुंदन शाह डॉक्टर के यहाँ से लौटा, रिक्शे से किसी तरह उतर नहीं पा रहा था और आखिर में सीट से जमीन पर आ गिरा किसी कटे पेड़ की तरह–जाफर मियाँ अपने को रोक न सके। टेपरिकार्डर को परे करते तेजी से दौड़े।

कुंदन शाह के माथे पर उन्होंने हाथ फेरा। वह बेहोश हो गया था। दौड़कर जाफर मियाँ लोटे में पानी लाए और उसके मुँह पर पानी के छींटे मारे।

कुंदन शाह ने जब अपनी आँखें खोली और फड़फड़ाते होंठो से 'जाफर भाई' बुदबुदाया जैसे अंतिम साँस ले रहा हो–जाफर मियाँ की आँखों से झर-झर आँसू बह निकले।

थोड़ी देर बाद जाफर मियाँ चबूतरे पर बैठे शहनाई बजा रहे थे। शहनाई की आवाज से संभू बैठा न रहा। घर से वह ढोल बजाता निकला।

जाफर मियाँ की बीवी यह सब देख, सिर पर आँचल डाल अल्ला ताला से दुआ माँग रही थीं।

हरि भटनागर

प्रकाशन : सगीर और उसकी बस्ती के लोग, नाम में क्या रखा है, बिल्ली नहीं दीवार (कहानी संग्रह)

सम्मान : पुश्किन सम्मान